संस्कृत साधना भाग-5

प्रथमः पाठः वन्दना (Prayer)

हिंदी अनुवाद

नमामः ..... त्वं प्रभो।

अनुवाद—हे प्रभु! हम तुम्हें नमन करते हैं, तुम्हें नमन करते हैं, तुम्हें नमन करते हैं। हे प्रभु! तुम पिता हो और तुम माँ हो, तुम मित्र और भाई हो।

यच्छ ..... सुखं तथा।।

अनुवाद—हे प्रभु! बुद्धि दो, बल दो, विद्या और नम्रता दो। कर्त्तव्यनिष्ठ होने की भावना दो, स्वास्थ्य तथा सुख दो।

दुर्गुणान् ..... त्यजामः च।।

अनुवाद—हे प्रभु! हमारे दुर्गुणों को दूर करो, अच्छे गुणों को दो। हम अच्छे कर्मों (कार्यों का) का आचरण करें और बुरे कर्मों को छोड़ें।

भवामः ..... हे प्रभो।।

अनुवाद—हम देशभक्त हों और गरीबों के सहायक बनें। हे प्रभु! हमारी प्रार्थना पूरी करो, भला करो।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित श्लोकों की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

उत्तर– (क) यच्छ बुद्धिं **बलं यच्छ, यच्छ** विद्यां च नम्रताम्।
कर्त्तव्यनिष्ठतां यच्छ **यच्छ स्वास्थ्यं सुखं तथा।**

(ख) भवामः देशभक्ताः वयं **दीनानां च सहायकः।**
अस्माकं प्रार्थनां पूरय मंगलं कुरु हे प्रभो।

2. निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– अनुवाद—हे प्रभु! हमारे दुर्गुनों को दूर करो, अच्छे गुणों को दो। हम अच्छे कर्मों (कार्यों) का आचरण करें और बुरे कर्मों को छोड़ें।

3. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) बुद्धिम्—हे प्रभु! अस्मान् सद् **बुद्धिं** देहि।
(ख) स्वास्थ्यम्—प्रातः भ्रमणेन अस्माकं **स्वास्थ्यं** सम्यक् तिष्ठति।
(ग) दीनानाम्—वयं **दीनानां** सहायकाः भवेम।
(घ) आचरामः—वयं सदा सुकार्याणि **आचरामः**।

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ हिन्दी व अंग्रेजी में लिखिए–

उत्तर–

	शब्दः	**हिन्दी**	**अंग्रेजी**
(क)	त्यजामः	= **छोड़ते हैं**	**to leave**
(ख)	पूरय	= **पूरी करो**	**complete**
(ग)	आचरामः	= **हम करें**	**we should do**

5. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक (विलोम) शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) **जननी** (ख) **शत्रुः**
(ग) **धनिकः** (घ) **कुकर्मः**

द्वितीयः पाठः मातृभक्तिः देशभक्तिश्च (Mother-Devotion and Patriotism)

हिन्दी अनुवाद

माता ..... स्मरत्येव।

अनुवाद—माता और मातृभूमि ये दो ही सर्वोत्तम हैं। माता पुत्र के लिए अपने कष्ट की चिंता नहीं करती है। वह हमेशा पुत्र की सुख की चिंता ही करती है। माँ बालक के लिए अपना सब कुछ भी छोड़ सकती है। इसलिए लोगों को हमेशा माँ की पूजा करनी चाहिए।

जिस प्रकार हमारी माता हमारा लालन करती है, वैसे ही हमारी जन्मभूमि भी हमारा पालन करती है। इसके जल, वायु और मिट्टी से हम लगातार पुष्ट होते जाते हैं। इसकी ही गोद में अपने बाल-सखाओं के साथ आजादी से खेलते हैं। इसलिए अपने देश के प्रति हमारे हृदय में सम्मान और आदर होना स्वाभाविक ही है। मनुष्य जहाँ कहीं भी चला जाए, जन्मभूमि को हमेशा याद करता है।

भारतवर्षः ..... पुरस्तात्।।

अनुवाद—भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है। प्राचीन समय में चक्रवर्ती भरत नाम के राजा थे। उनके द्वारा शासित देश 'भारतवर्ष' इस नाम को प्राप्त हुआ। यहाँ गंगा, यमुना, नर्मदा,

कावेरी जैसी महानदियाँ हैं। अंगूर, अनार, जामुन आमादि अधिक फलों के कारण यह (भारतभूमि) सुफल है

हम भारतीय देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं क्योंकि देवता भी हमारी जन्मभूमि में जन्म लेने के लिए इच्छा रखते हैं। विष्णु पुराण में कहा है—''जिसके गीत देवता लोग गाते हैं और स्वर्ग का त्याग कर इस धरा भारतभूमि पर जन्म लेना चाहते हैं, ऐसी भारतभूमि धन्य है और इस भूमि में जन्म लेने वाले पुरुष देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं।''

अस्माकं ..... गरीयसी।।

अनुवाद—हमारी पराधीनता का मुख्य कारण एकता का अभाव था। इसलिए हमें पूरी तरह लड़ाई-झगड़ा छोड़ देना चाहिए। जन्मभूमि के गौरव को बढ़ाने के लिए हम सभी को प्रयास करना चाहिए।

इस प्रकार देश के गौरव को बढ़ाने के लिए प्राण भी छोड़ देने चाहिए, क्योंकि—

''माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।''

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–

उत्तर– (क) भारतवर्षः अस्माकं जन्मभूमिः अस्ति।

(ख) देवाः अस्माकं जन्मभूमौ जन्मगृहणाय स्पृहयन्ति।

(ग) विष्णु पुराने उक्तं अस्ति यत्—यस्याः गीतानि देवाः गायन्ति स्वर्गं त्याज्य च अस्यां धरायां भारतभूमौ जन्मगृहणाय स्पृहयन्ति, एता दृशी, भारतभूमिः धन्यास्ति अस्यां भूमौ उत्पन्नः पुरुषाः देवेभ्यो अपि श्रेष्ठनाः सन्ति।

(घ) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(ङ) अस्माकं पराधीनतायाः कारणम् एकतायाः अभावः आसीत्।

तृतीयः पाठः

हिन्दी अनुवाद

अस्माकं ..... स्थापयन्ति।

अनुवाद—हमारे संरक्षण और वृद्धि के लिए प्रकृति सदा यत्न करती है। सागर, पर्वत, वन, नदियाँ, तालाब सभी संसार के सुखों को बढ़ाते हैं। पेड़ हवा के विकारों अर्थात् उसमें मिली हानिकारक गैसों को स्वयं पीते हैं और स्वास्थ्य के योग्य वायुमंडल प्रदान करते हैं। ये पत्ते, फूल, जंगल, फल देकर हमारा बहुत उपकार करते हैं। वातावरण का और

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) सर्वैः पूर्णतया कलहः परिहर्तव्यः।

(ख) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(ग) अस्माकं हृदयेषु स्वदेशस्य सम्मानः आदरश्च स्वाभाविकः अस्ति।

(घ) अस्माकं पराधीनतायाः मुख्यं कारणम् एकतायाः अभावः आसीत्।

(ङ) माता पुत्राय स्वकष्टान् अपि न चिन्तयति।

3. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है।

(ख) मनुष्य जहाँ कहीं भी जाए, हमेशा जन्मभूमि को याद करता ही है।

(ग) माँ बालक के लिए अपना सब कुछ छोड़ सकती है।

(घ) माता और मातृभूमि स्वर्ग से श्रेष्ठ हैं, बढ़कर हैं।

(ङ) लोगों को हमेशा माता की पूजा करनी चाहिए।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) भारतवर्षः अस्माकं **जन्मभूमिः** अस्ति।

(ख) माता **बालकस्य** कृते सर्वस्वमपि त्यक्तुं शक्नोति।

(ग) अस्याः एव अङ्के स्व **बालमित्रैः** सह स्वच्छन्दं क्रीडामः।

(घ) **पुरा चक्रवर्ती** भरतो नाम राजा आसीत्।

(ङ) **जन्मभूमेः** गौरववर्धनाय सर्वैः चेष्टितव्यम्।

5. निम्नलिखित श्लोकांश का अर्थ लिखिए–

उत्तर– श्लोक—माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं, बढ़कर हैं।

पर्यावरणम् (Environment)

वायु का परिशोधन करते हैं। वन प्राणी और सागर में रहने वाले जन्तु भी पर्यावरण का संतुलन स्थापित करते हैं।

सम्प्रति ..... प्रदूषयन्ति।

अनुवाद—इस समय तेल से चलने वाली यान (गाड़ियाँ) और यंत्र अपने धुएँ से स्वस्थ वायुमंडल को बहुत ज्यादा प्रदूषित कर रहे हैं। वायु प्रदूषण प्रतिक्षण बढ़ रहा है। शिलाखंडों को तोड़कर और वनों को काटकर बनाए गए पहाड़ी रास्तों में यान (गाड़ियाँ) दौड़ रहे हैं। अस्त्रों के

परीक्षण से समुद्र का वातावरण भी प्रदूषित होता है।

जैसे-जैसे पक्के पत्थरों वाले रास्तों की संख्या बढ़ रही है, वैसे-वैसे प्रदूषण को बढ़ाने वाले यान और यंत्र (मशीनें) बढ़ रहे हैं। इसके विपरीत उस तरह वायुमंडल को शुद्ध करने वाले साधन नहीं बढ़ रहे हैं। अपने थोड़े से लाभ के लिए लालच से अथवा अज्ञानता से लोग स्वयं का बहुत नुकसान कर रहे हैं।

लोग मनोरंजन के लिए वन के जंतुओं को मारते हैं। पदार्थादि के लालच से वनों को काट रहे हैं। प्रदूषित जल के द्वारा गङ्गा, कावेरी जैसी नदियों का जल प्रदूषित होता है।

समुद्र प्राणिनां ..... सम्वर्धन्ताम्।

अनुवाद—यत्नपूर्वक समुद्री प्राणियों की हिंसा करते हैं। इससे पानी, भूमि और आकाश में सब जगह प्रदूषण बढ़ता है। इसलिए वनों की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। गाँवों, नगरों में स्थान-स्थान पर बाग लगाने चाहिए। सब्जी आदि में बागों की बढ़ोतरी करनी चाहिए। वन-प्राणियों के संरक्षण के लिए जंगलों की संख्या बढ़ानी चाहिए। वृक्षों का कटान रोकना चाहिए जिससे सागर बिना बाधा के उल्लासपूर्वक हिलारें लें, गगनमंडल स्वच्छ हो। पहाड़ों में औषधियों और नदियों के स्रोतों को बढ़ाना चाहिए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) सम्प्रति तैल चालितानि यानानि यन्त्राणि च स्वकीयै: धूमै: वायुमण्डल प्रदूषयन्ति।

(ख) प्रकृति: अस्माकं संरक्षणाय सम्वर्धनाय च सदैव यत्नं करोति।

(ग) अस्त्राणां परीक्षणै: समुद्रस्य वातावरणं प्रदूषितं भवति।

(घ) वनप्राणिनां संरक्षणाय अरण्यानां सङ्ख्या वर्धनीया।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **वन प्राणिनः सागरजन्तवश्चापि** पर्यावरणस्य सन्तुलनं स्थापयन्ति।

(ख) वायुप्रदूषणं **प्रतिक्षणं** वर्धते।

(ग) पर्वतेषु **औषधयः** नद्यः स्रोतांसि च सम्वर्धन्ताम्।

(घ) वनानि यत्नतः **रक्षणीयानि।**

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) वनप्राणिनः सागरजन्तवश्चापि पर्यावरणं परिशोधने सहायकाः सन्ति।

(ख) वनेभ्यः प्रकृत्याः शोभा वर्धते।

(ग) धूम्रः वायुमण्डलं प्रदूषयते।

(घ) अस्त्राणां परीक्षणैः समुद्रस्य जलं प्रदूषितं भवति।

(ङ) जले पृथिव्यां च सर्वत्र प्रदूषणं वर्धते।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) लोग समुद्र के प्राणियों की यत्नपूर्वक हिंसा करते हैं।

(ख) वनों की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

(ग) पर्वतों में औषधियाँ और नदियों के स्रोतों को बढ़ाएँ।

(घ) अस्त्रों के परीक्षण से समुद्र का वातावरण प्रदूषित होता है।

(ङ) पेड़ वायु के विकार अर्थात् अशुद्ध वायु को स्वयं पीते हैं।

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) **शैलः** (ख) **सरोवरः**

(ग) **उदधिः** (घ) **पवनः**

6. निम्नलिखित वाक्यों को सही करके पुनः लिखिए–

उत्तर– (क) अस्माकं संरक्षणाय प्रकृतिः सदैव यत्नं करोति।

(ख) वृक्षाः वायोः विकारान् स्वयं पिबन्ति।

(ग) यानानि स्व धूमैः वायुमण्डलं भृशं प्रदूषयन्ति।

(घ) शाकवाटिकानां सम्वर्धनं करणीयम्।

(ङ) जनाः समुद्रप्राणिनां हिंसनं यत्नेन कुर्वन्ति।

चतुर्थः पाठः

चतुरः शशकः (Clever Rabbit)

हिन्दी अनुवाद

कस्मिंश्चिद् ..... अस्तु!''

अनुवाद—किसी वन में कोई शेर रहता था। उसका नाम भारसुरक था। वह प्रतिदिन जंगल के बहुत सारे पशुओं को बिना कारण मारता था। एक बार सभी दु:खी पशु उसके पास गए और बोले—''हे मृगराज! तुम रोज बहुत सारे पशुओं को क्यों मारते हो? तुम्हारी तृप्ति तो एक पशु से होती है। इसलिए तुम इस प्रकार हमें न मारो। प्रतिदिन एक पशु स्वयं ही तुम्हारे पास खाने के लिए आएगा।'', शेर बोला—''ऐसा ही हो।''

अनन्तरम् ..... तस्य''

अनुवाद— इसके बाद एक पशु रोज वहाँ जाता था और शेर उसको मारकर खा जाता था। एक बार क्रमपूर्वक एक खरगोश की बारी आई। उसने रास्ते में जाते हुए एक कुएँ को देखा। वह देर से शेर के पास गया। शेर भूखा था। उसने खरगोश को देखकर गुस्से से पूछा—''हे! तुम कहाँ थे?'' खरगोश विनम्रता से बोला—''हे वनराज! वन में एक दूसरे शेर ने मेरा मार्ग रोक लिया।'' उसने कहा—''मैं वन का राजा हूँ भारसुरक नहीं।'' भारसुरक यह सुनकर गुस्सा हो गया। तब वह चालाक खरगोश, भारसुरक को उस कुएँ के पास ले गया। भारसुरक ने कुएँ में अपनी छाया को देखा। वह मूर्ख अपनी छाया को दूसरा शेर मानकर उसे मारने के लिए उसमें कूद गया। अंत में वह वहीं मर गया। और कहा है—

''जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बील है।''

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) सिंहः एकस्मिन् वने प्रतिवसति स्म।
(ख) सिंहस्य भारसुरकः नाम आसीत्।
(ग) मृगाः सिंहम् अवदन् यत्—प्रतिदिनम् एकः मृगः स्वयमेव तव समीपे भोजनाय आगमिष्यति।
(घ) शशकेन सिंहं विलम्बस्य एतत् कारणम् अकथयत् यत् वने एकेन अन्येन सिंहेन मम मार्गः अवरुद्धः।
(ङ) सिंहः कूपे कूर्दित्वा मृतः।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) तस्य नाम **भारसुरकः** आसीत्।
(ख) अनन्तरम् एकः मृगः **नित्यं** तत्र अगच्छत्।
(ग) सः मार्गे गच्छन् एकं **कूपम्** अपश्यत्।
(घ) भारसुरकः **तदाकर्ण्य** अक्रुध्यत्।
(ङ) बुद्धिर्यस्य **बलं** तस्य।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) शशकः चतुरः आसीत्।
(ख) सिंहस्य नाम भारसुरकः आसीत्।
(ग) वने अनेकाः पशवः आसन्।
(घ) सिंहः कूपे कूर्दित्वा मृतः।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) प्रतिदिन एक पशु स्वयं ही तुम्हारे पास खाने के लिए आएगा।
(ख) एक बार क्रमपूर्वक एक खरगोश की बारी आई।
(ग) मैं वन का राजा हूँ भारसुरक नहीं।
(घ) जिसके पास बुद्धि है उसके पास बल है।

5. निम्नलिखित में 'तुमुन्' प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाइए एवं उनके अर्थ लिखिए—

उत्तर–

शब्दः	**अर्थः**
हसितुम्	हँसने के लिए
गन्तुम्	जाने के लिए
वक्तुम्	बोलने के लिए
नेतुम्	ले जाने के लिए

6. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) सिंहः—एकस्मिन् वने एकः **सिंहः** गच्छति स्म।
(ख) भोजनाय—सिंहः **भोजनाय** वने अभ्रमत्।
(ग) विलम्बेन—शशकः **विलम्बेन** सिंहस्य समीपे अगच्छत्।
(घ) क्रोधेन—सिंह **क्रोधेन** उन्मत्तः अभवत्।

7. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

उत्तर– (क) शेर (ख) छाया
(ग) भूखा (घ) मानकर

पञ्चमः पाठः विद्यायाः महत्त्वम् (Importance of Knowledge)

हिन्दी अनुवाद

मातेव रक्षति ..... विद्या।।

अनुवाद—माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह हितकारी कार्यों में लगाती है और पति की तरह दुःखादि को दूर करके रमण करती है। धन को बढ़ाती है और चारों दिशाओं में कीर्ति (यश) को फैलाती है। कल्पलता (अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाले वृक्ष की तरह) के समान यह विद्या क्या-क्या कार्य सिद्ध नहीं करती है। अर्थात् विद्या को ग्रहण करने से हर कामना पूरी होती जाती है।

कामधेनु ..... स्मृतम्।।

अनुवाद—कामधेनु (ऐसी गाय जो हर इच्छा पूरी करती है, पौराणिक कथाओं के अनुसार) के गुणों को धारण करने वाली विद्या समय के बीतने पर फल देने वाली है अर्थात् पढ़ी हुई विद्या कभी निष्फल नहीं जाती। विदेश में यह माता के समान होती है, विद्या को गुप्त धन (छिपा खजाना) माना गया है।

न चौराहार्यं ..... प्रधानम्।।

अनुवाद—चोरों द्वारा न चुराई जाने वाली और राजाओं द्वारा हरण न की जाने वाली, भाइयों द्वारा न बाँटी जाने वाली और न ही बोझ वाली, खर्च करने पर नित्य बढ़ने वाली ऐसी विद्या (विद्यारूपी धन) सब धनों में श्रेष्ठ है।

अन्नदानं ..... विद्यया।।

अनुवाद—अन्न का दान बड़ा दान है, उससे भी बड़ा दान विद्या का दान है। अन्न से तो कुछ क्षण की तृप्ति होती है जबकि विद्या जीवन पर्यंत तृप्त करती है।

विद्याधनं ..... नीयते।।

अनुवाद—विद्या का वह मुख्य धन श्रेष्ठ धन है, इससे अलग धन नहीं यह दान करने से अर्थात् इसे पढ़ाने अथवा बाँटने से प्रतिदिन बढ़ता है और ले जाने में बोझ नहीं होता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) विद्या दिक्षु कीर्तिं वितनोति।
(ख) प्रवासे विद्या मातृसदृशी भवति।
(ग) विद्याधनं श्रेष्ठम् अस्ति।
(घ) अन्नदानात् परं विद्यादानम् अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) लक्ष्मी तनोति **वितनोति** च दिक्षुकीर्तिम्।
(ख) प्रवासे **मातृसदशी** विद्या गुप्तधनं स्मृतम्।
(ग) न **भ्रातृभाज्यं** न च भारकारी।
(घ) अन्नदानं परं दानं **विद्यादानं** ततः परम्।
(ङ) **दानेन** वर्धते नित्यं भाराय न च नीयते।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) विद्या कल्पलतेव किं किं न साधयति?
(ख) विद्या कामधेनु गुणस्था अस्ति या ह्यकाले फलदायिनी अस्ति।
(ग) विद्या धनं चौरः न चोरयितुं शक्नोति।
(घ) अन्नेन क्षणिका तृप्तिः भवति।
(ङ) विद्या धनं सर्वधनेषु श्रेष्ठम् अस्ति।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) न चोर द्वारा चुराई जाने वाली है और न राजाओं द्वारा हरण की जाने वाली।
(ख) विद्या का वह मुख्य धन श्रेष्ठ धन है, इससे अलग धन नहीं।
(ग) विदेश में विद्या माता के समान है, यह गुप्त धन माना गया है।
(घ) विद्या कल्पलता के समान क्या-क्या सिद्ध नहीं करती है।
(ङ) (विद्यारूपी धन) दान करने से रोज बढ़ता है और ले जाने में बोझ नहीं होता है।

5. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) प्रवासे—विद्या **प्रवासे** मातृवत् रक्षति।
(ख) तृप्तिः—अन्नेन तु क्षाणिका **तृप्तिः** भवति।
(ग) नीयते—विद्या भाराय न **नीयते।**
(घ) वितनोति—विद्या दिक्षु कीर्तिं **वितनोति।**

6. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी में अर्थ लिखिए–

उत्तर– (क) पत्नी की तरह (ग) वह मुख्य
(ख) फैलाती है (घ) अलग

षष्ठः पाठः

रक्षाबन्धनम् (Rakshabandhanam)

हिन्दी अनुवाद

भारतवर्षे ..... भवति।

अनुवाद—भारतवर्ष में अनेक त्योहार आयोजित किए जाते हैं; जैसे—विजयादशमी, दीपावली, होली और रक्षाबंधन। इस उत्सवों में रक्षाबंधन प्रमुख त्योहार है। रक्षाबंधन प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा में होता है। यह उत्सव लोग खुशी और उल्लास से मनाते हैं। सब जगह आनंद ही आनंद होता है।

रक्षासूत्रं ..... प्रयच्छन्ति।

अनुवाद—रक्षासूत्र बहन के प्रेम का प्रतीक है। बहनें भाइयों के हाथ में रक्षा के धागे बाँधती हैं। बहनें भाइयों की दीर्घ आयु और जीवन की कामना करती हैं। भाई बहनों को उपहार देते हैं।

अस्माकं ..... उद्घोषितः अस्ति।

अनुवाद—हमारे भारतीय समाज में रक्षाबंधन का बहुत महत्व है। रक्षाबंधन के महत्व के विषय में एक दृष्टांत मिलता है। रानी कर्मवती ने हुमायूँ नामक मुगलशासक को अपनी रक्षा के लिए रक्षासूत्र भेजा था। इस रक्षासूत्र को स्वीकार करके उसने रानी कर्मवती को सम्मान की रक्षा की, रक्षाबंधन एकता और अखंडता का द्योतक है।

हिंदुओं का यह उत्सव विशिष्ट है। रक्षाबंधन परस्पर स्नेह का प्रतीक है। रक्षाबंधन के दिन लोग नदी किनारे श्रावणी कर्म करते हैं।

भारत सरकार ने यह दिन 'संस्कृत दिवस' के रूप में घोषित किया है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) उत्सवेषु 'रक्षाबन्धनम्' प्रमुख: महोत्सव: अस्ति।
(ख) रक्षाबन्धनं प्रतिवर्षं श्रावणमासस्य पूर्णिमायां भवति।
(ग) रक्षासूत्रं भगिन्या: प्रेम्ण: प्रतीकम् अस्ति।
(घ) भगिन्य: भ्रातृणां दीर्घायुष्यं जीवनं च कामयन्ति।
(ङ) भ्रातर: भगिनीभ्य: उपहाराणि प्रयच्छन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) उत्सवेषु **रक्षाबन्धनम्** प्रमुख: महोत्सव: अस्ति।
(ख) एतद् महोत्सवं जना: **हर्षोल्लासेन** मानयन्ति।
(ग) सर्वत्र **आनन्द: एव आनन्द: भवति।**
(घ) भगिन्य: **भ्रातृणां करेषु** रक्षासूत्राणि बध्नन्ति।
(ङ) हिन्दूनाम् अयम् उत्सव: **विशिष्ट:** अस्ति।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) अनेका = **बहुत सारे**
वाक्य– अस्माकं देशे **अनेका:** महोत्सवा: आयोज्यन्ते।
(ख) उत्सव: = **त्योहार**
वाक्य– रक्षाबन्धनस्य उत्सव: सर्वेषु पर्वेषु विशिष्ट: अस्ति।
(ग) आनन्द: = **खुशी**
वाक्य– रक्षाबन्धनावसरे सर्वत्र **आनन्द:** भवति।
(घ) प्रतीकम् = चिह्न
वाक्य– रक्षाबन्धनस्य उत्सव: प्रेम्ण: **प्रतीकम्:** अस्ति।
(ङ) उपहारम् = **उपहार**
वाक्य– भ्रातर: भगिनीभ्य: **उपहारं** यच्छन्ति।

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) हिन्दूनां चत्वार: प्रमुखा: उत्सवा: सन्ति।
(ख) रक्षासूत्रं भगिनीनां प्रेम्ण: प्रतीकं भवति।
(ग) रक्षाबन्धनं भारतस्य प्रमुख: उत्सव: अस्ति।
(घ) अयं 'श्रावणी' इति नाम्ना प्रसिद्धम् अस्ति।
(ङ) राज्ञी कर्मवती हुमायूं रक्षासूत्रं प्रेषितवती।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

उत्तर– (क) अनादिकालात् = **अनादिकाल से**
(ख) परस्पर = **आपस**
(ग) दृष्टान्त: = **उदाहरण**
(घ) प्रतीकम् = **चिह्न**
(ङ) मेघानाम् = **बादलों का**
(च) पवित्र: = **पवित्र**

6. निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) बहव: (ग) पर्व
(ख) मनुष्य: (घ) चिह्न:
(ङ) विशेष: (च) प्रेम:

सप्तमः पाठः

सिद्धार्थः (Siddhartha)

हिन्दी अनुवाद

प्रात: स्मरणीय: ..... अत्यजत्।
अनुवाद—प्रात: स्मरणीय महात्मा बुद्ध के नाम को नहीं जानता है। इन्होंने सभी मनुष्यों को अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
गौतमबुद्धस्य ..... गौतमी अकरोत्।
अनुवाद—गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु नगर में हुआ। ये शाक्यवंशीय शुद्धोधन के सुपुत्र थे। महामाया नाम की इनकी माता थीं। इनका पहला नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध का विवाह यशोधरा नाम की राजकन्या के साथ हुआ। माता की मृत्यु के बाद इनका पालन विमाता (सौतेली माँ) गौतमी ने किया।
बाल्यादेव ..... अभवत्।
अनुवाद—बचपन से ही सिद्धार्थ का मन विषयों (भोग-विलास) में नहीं लगा। एक बार बीमार तथा कमजोर (दुबले) मनुष्य को देखकर इनका मन व्याकुल हो गया। इसके बाद एक मृतक को और उसके बाद संन्यासी को देखकर इनके हृदय में महान वैराग्य उत्पन्न हुआ। एक बार सिद्धार्थ रात में अपनी प्रिय पत्नी और नवजात पुत्र को छोड़कर वन में चले गए। सिद्धार्थ को सतत अभ्यास के द्वारा एक दिन बोध हुआ, तब से लेकर ही वे बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हो गए। महात्मा बुद्ध के विचारों और उपदेशों का प्रचार न केवल भारत में अपितु चीन, जापान, लंकादि देशों में भी हुआ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) सिद्धार्थस्य जन्म शाक्यवंशीये कुले अभवत्।
(ख) यदा एषः एकं आतुरं कृशकायं मनुष्यं, मृतकं, ततः संन्यासिनम् अपश्यत् तदा अस्य हृदये वैराग्यः अजायत्।
(ग) सिद्धार्थस्य विवाहः यशोधरा नामन्याः राजकन्यया सह अभवत्।
(घ) वने सततााभ्यासेन यदा अयं बोधं प्राप्तवान् तदा अयं बुद्धः इति नाम्ना प्रसिद्धो अभवत्।
(ङ) बुद्धस्य उपदेशानां प्रचारः भारतसहितं चीन, जापान, लंकादि देशेषु अभवत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) सिद्धार्थस्य चित्तः **विषयेषु** नारमत्।
(ख) अयं सर्वान् मानवान् **अहिंसायाः** पाठम् अपाठयत्।
(ग) तस्य हृदये महत् **वैराग्यः** अजायत्।
(घ) सिद्धार्थस्य पालनं **विमाता गौतमी** अकरोत्।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) अहिंसा श्रेष्ठः धर्मः अस्ति।
(ख) जीवेषु दयां कुरु।
(ग) गौतम बुद्धः संसारस्य कल्याणम् अस्पृहयत्।
(घ) गौतम बुद्धस्य जन्म कपिलवस्तु नगरे अभवत्।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) वे बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।
(ख) गौतम बुद्ध का विवाह यशोधरा नाम की राजकन्या के साथ हुआ।
(ग) माता की मृत्यु के बाद इनका पालन विमाता गौतमी ने किया।
(घ) बचपन से ही सिद्धार्थ का मन विषयों में नहीं रमा (लगा)।

5. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर– (क) नारमत् = **न + अरमत्**
(ख) प्रसिद्धोऽभवत् = **प्रसिद्धः + अभवत्**
(ग) सततााभ्यासेन = **सतत + अभ्यासेन**

6. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) विवाहः—सिद्धार्थस्य **विवाहः** एकया राजकन्यया सह प्रभवत्।
(ख) वैराग्यः—एकं मृतकं दृष्ट्वा सिद्धार्थस्य हृदये **वैराग्यः** अजायत्।
(ग) सुपुत्रः—गौतम बुद्धः राजा शुद्धोधनस्य **सुपुत्रः** आसीत्।
(घ) सिद्धार्थः—यदा **सिद्धार्थः** बोधं प्राप्वान् तदा बुद्धः इति नाम्ना प्रसिद्धः जातः।
(ङ) अहिंसायाः—अनेन महात्मना जनेभ्यः **अहिंसायाः** उपदेशम् अयच्छत्।

7. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन समानार्थी शब्द लिखिए–

उत्तर–

(क)	पादपः	द्रुमः	तरुः
(ख)	हस्तिः	द्विपः	करिः
(ग)	सुधांशुः	रजनीपतिः	हिमांशुः
(घ)	तनयः	सुतः	आत्मजः

अष्टमः पाठः

सुभाषितानि (Eloquently)

हिन्दी अनुवाद

त्यज ..... नित्यमनित्यताम्।।

अनुवाद—दुर्जन (दुष्ट व्यक्ति) का साथ छोड़ दो, सज्जनों का साथ करो। दिन-रात पुण्य करो और उस नित्य (कभी नष्ट न होने वाले का) स्मरण करो अनित्य का नहीं।

धर्मं चरत ..... मारऽयरम्।।

अनुवाद—धर्म का आचरण करो, अधर्म का मत करो, सत्य बोलो, असत्य मत बोलो। दीर्घ (ऊँचा) देखो, नीचा मत देखो, अपने आप को देखो दूसरे को नहीं।

षड्दोषाः ..... दीर्घसूत्रता।।

अनुवाद—भलाई चाहने वाले पुरुष को छः दोष (बुराइयाँ) छोड़ देने चाहिए—नींद, ऊँघना, डर, क्रोध, आलस्य और प्रत्येक कार्य को विलंब से करने का स्वभाव।

उद्यमः ..... सहायकृतः।।

अनुवाद—उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम, जहाँ ये छः चीजें होती हैं, वहाँ भगवान भी उसकी सहायता करते हैं।

गच्छन् ..... गच्छति।।

अनुवाद—नर चींटी चलते हुए सौ योजन चली जाती है, जबकि गरुड़ न जाते हुए (आलस्य में भरे हुए) एक कदम भी नहीं जाता है।

लालयेत् .....मित्रमिवाचरेत्।।

अनुवाद—पाँच वर्ष तक बच्चे का लालन करे, प्यार करे, आगे के पाँच वर्ष यानी दस वर्ष तक ताड़ना करे, दंड दे।

सोलह वर्ष की आयु प्राप्त होने पर पुत्र के साथ मित्र की तरह आचरण करे।

गुणो ..... वै धनम्॥

अनुवाद—गुण रूप को सुशोभित करता है, ज्ञान धन को सुशोभित करता है। सफलता विद्या को सुशोभित करती है, आचरण (अच्छा व्यवहार) इन सब धनों को सुशोभित करता है।

एकेनापि ..... कुलं यथा॥

अनुवाद—जैसे एक अच्छे वृक्ष से भी पुष्पित (खिले फूल की) फूल की खुशबू से पूरा वन सुगंध वाला हो जाता है, वैसे ही अच्छे पुत्र से, उसके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों से कुल खुशबू से भर जाता है, वंश का नाम रोशन होता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) दुर्जनस्य संसर्गः त्याज्यः।
(ख) निद्रा, तन्द्राः भयं, क्रोधः, आलस्यं दीर्घ सूत्रता इत्येते षड्दोषाः पुरुषेण हातव्याः।
(ग) गच्छन् पिपीलकः योजनानां शतान्यापि याति।
(घ) षोडशे वर्षे प्राप्ते पुत्रं मित्रमिवाचरेत्।
(ङ) गुणः रूपं भूषयते।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) त्यज **दुर्जनः** संसर्गः भज **साधुसमागमम्।**
(ख) उद्यमः **साहसः, धैर्यः, बुद्धिः, शक्तिः, पराक्रमः।**
(ग) गच्छन् पिपीलको याति **योजनानां** शतान्यपि।
(घ) लालयेत् **पञ्चवर्षाणि** दशवर्षाणि **ताडयेत्।**
(ङ) एकेनापि सुवृक्षेण **पुष्पितेन सुगन्धिना।**

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) दुर्जनस्य संसर्गः त्याज्यः।
(ख) धर्मस्य आचरणं कुरु सत्यं च वद।
(ग) भूतिमिच्छता षड्दोषाः समाप्ताः भवन्ति।
(घ) षोडशवर्षीय पुत्रेण सह मित्रमिव व्यवहरेत्।
(ङ) पुष्पितेन वृक्षेण वनं सुवासितं भवति।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) दिन-रात पुण्य करो और चिरस्थाई, जो कभी नष्ट न हो ऐसे ईश्वर को याद करो, नश्वर को नहीं।
(ख) नर चींटी चलते हुए सौ योजन भी चली जाती है।
(ग) पाँच वर्ष तक लालन करे, दस वर्ष तक ताड़ना करे।
(घ) सफलता विद्या को सुशोभित करती है।
(ङ) सोलह वर्ष का होने पर पुत्र के साथ मित्रवत् आचरण करे।

5. निम्न शब्दों का प्रयोग करके संस्कृत में वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) संसर्गः—दुर्जनस्य **संसर्गः** कदापि न करणीयः।
(ख) धर्मं—जीवने कदापि **धर्मं** न परिवर्जयेत्।
(ग) आलस्यं—**आलस्यं** मनुष्यस्य महान् शत्रुः अस्ति।
(घ) सहायकृतः—ये धैर्यवान्, बुद्धिमान्, परिश्रमिणः भवन्ति तत्र देवः **सहायकृतः** भवति।
(ङ) पिपीलकः—**पिपीलकः** गच्छन् शतयोजनं याति।

6. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर– (क) पुण्यम् + अहोरात्रम्
(ख) भूतिम् + इच्छता
(ग) मा + अधर्मम्
(घ) साधुः + समागम्

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) पुत्री (ख) शान्तः
(ग) उद्यमः (घ) असत्यः

नवमः पाठः

उत्तमः छात्रः (Good Student)

हिन्दी अनुवाद

उत्तमः ..... क्रुध्यति।

अनुवाद—उत्तम छात्र सभी छात्रों में हमेशा आगे रहता है। वह हमेशा सूर्योदय से पहले बिस्तर छोड़ता है। उठकर माता और पिता के चरण छूता है। वह प्रातः काल घूमने के लिए जाता है। वह रोज अपने मित्रों के साथ बाग में खेलता है, व्यायाम भी करता है। वह प्रातःकाल स्नानादि कार्यों को करके समय से विद्यालय जाता है। वह कभी भी देर नहीं करता है। विद्यालय जाकर शिक्षकों को प्रणाम करता है। वह किसी के साथ भी झगड़ा नहीं करता है। वह अपंग बालकों को देखकर नहीं हँसता है। वह गर्व (घमंड में) से युक्त नहीं होता है। वह मित्रों को कभी गुस्सा नहीं करता है।

उत्तमः छात्रः ..... भवति।

अनुवाद—उत्तम छात्र ध्यान से और मन से अपनी पाठ्यपुस्तकों को पढ़ता है और पाठों को याद करता है। वह प्रतिदिन गृहकार्य करता है। वह विद्यालय के विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों में और खेलादि कार्यक्रमों में शामिल होता है। वह हमेशा दूसरों की सहायता करता है। इन्हीं गुणों के कारण गुरुजन उसमें स्नेह करते हैं (रखते हैं)। उत्तम छात्र सभी का प्रिय होता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) उत्तमः छात्रः सर्वेषु छात्रेषु अग्रे तिष्ठति।
(ख) उत्तमः छात्रः सांस्कृतिकेषु कार्यक्रमेषु क्रीडादि कार्यक्रमेषु च सम्मिलितः भवति।
(ग) उत्तमः छात्रः अपङ्गान् बालकान् दृष्ट्वा न हसति।
(घ) विद्यालयं गत्वा उत्तमः छात्रः शिक्षकान् प्रणमति।
(ङ) सः मित्रेभ्यः कदापि न क्रुध्यति।

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) सः **गर्वेण** युक्तो न भवति।
(ख) उत्तमः छात्रः सर्वेषु **छात्रेषु सदैव अग्रे** तिष्ठति।
(ग) सः प्रातः काले **भ्रमणाय** गच्छति।
(घ) गुरवः तस्मिन् **स्नेहं** कुर्वन्ति।
(ङ) **सः कदापि** विलम्बं न करोति।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) उत्तमः छात्रः प्रातः उत्थाय मातरं पितरं च प्रणमति।
(ख) सः भ्रमणाय उद्याने गच्छति।
(ग) उत्तमः छात्रः स्वगृकार्यं समयेन करोति।
(घ) ते विद्यालये स्व अध्यापकान् प्रणमन्ति।
(ङ) उत्तमः छात्रः सर्वेषां प्रियः भवति।

4. निम्नलिखित शब्दों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर– (क) क्रुध्यति—जनकः पुत्राय कदापि न **क्रुध्यति।**
(ख) करोति—सः प्रतिदिनं देवालये पूजां **करोति।**
(ग) उत्थाय—अहं प्रातः **उत्थाय** भ्रमणाय गच्छामि।
(घ) मनसा—राहुलः **मनसा** पाठं पठति।
(ङ) तस्मिन्—सर्वे जनाः **तस्मिन्** स्नेहं कुर्वन्ति।

5. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) उत्तम छात्र सभी का प्रिय होता है।
(ख) वह हमेशा दूसरों की सहायता करता है।
(ग) उठकर माता और पिता के चरण छूता है।
(घ) उत्तम छात्र प्रतिदिन गृहकार्य करता है।
(ङ) वह प्रातः काल स्नानादि कार्यों को करके समय से विद्यालय जाता है।

6. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) अधमः (ख) संध्या
(ग) शान्तिः (घ) स्वकीयम्

दशमः पाठः

प्रियः भारतः (Lovely India)

हिन्दी अनुवाद

अस्माकं ..... वाञ्छन्ति।

अनुवाद—हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। यहाँ के सभी लोग भारतीय हैं। हमारा देश बहुत प्यारा है। यहाँ के निवासी 'हिन्दू' इस नाम से प्रसिद्ध हैं। इसलिए यह देश 'हिन्दुस्तान' कहलाता है। हमारे देश का भारत नाम प्राचीन राजा भरत के नाम से प्रसिद्ध है। इस देश की शोभा को देखकर देवता भी यहाँ जन्म पाना चाहते हैं।

भारतवर्षस्य ..... अभवन्।

अनुवाद—भारतवर्ष की धरती महापुरुषों, महवीरों और शूरों की माता है। यहीं शिव, दधीचि, हरिश्चंद्र आदि त्यागी, दानी और महापुरुष हुए थे। शिशोदिया कुलभूषण महाराणा प्रताप, शिवराज, गुरुगोविंद सिंह, भगत सिंह आदि हमारे देश के वीर थे। यह गौरव का विषय है कि यहाँ रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, चाँद बीबी, इंदिरा गांधी जैसी वीरांगनाएँ भी हुईं।

अस्मिन् ..... भवति।

अनुवाद—इस देश में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी ये सात नदियाँ बहती हैं। जैसे हमारी माता हमारा पालन करती है, वैसे ही ये नदियाँ और जन्मभूमि हमारा पालन करती हैं।

हमारे देश के उत्तर भाग में देवताओं की आत्मा हिमालय पर्वतों का राजा विराजमान है, यह न केवल हमारे देश का गौरव है, अपितु विदेशी आक्रमण से भी हमारे देश की रक्षा

करता है। लंबे समय तक इस पर्वत ने पहरेदार के समान खड़े रहकर भारतवर्ष की रक्षा की।

प्रकृति देवी की भारत में बड़ी कृपा है। छ: ऋतुओं का ऋतु-चक्र यहीं परिवर्तित होता है। सूर्य और चंद्रमा का प्रकाश जैसा यहाँ फैला है, वैसा विश्व के कुछ ही देशों में होता है।

अयं .....गरीयसी।''

अनुवाद—यह भारत देश विश्व का गुरु भी कहा जाता है। गणित विद्या की मूल अंकलेखन प्रणाली सबसे पहले भारतवर्ष में शुरू हुई। अब भी अंक को हिन्दसा (हिन्द से भारत में आई) ऐसा कहते हैं। जल से परिपूर्ण, फलों से परिपूर्ण हरी-भरी इस देश की भूमि देवताओं के मनों को आकर्षित करती है। क्योंकि माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं, बढ़कर हैं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) ये भारतदेशे निवसन्ति ते भारतीया: सन्ति।
(ख) अस्माकं देशस्य नाम 'भारत:', 'हिन्दुस्थानम्' वा अस्ति।
(ग) भारतदेशस्य उत्तरभागे देवतात्मा हिमालयो नगाधिराज: विराजते।
(घ) अत्रव्या: प्रकृति: महती कृपाकर्त्री अस्ति।
(ङ) भारतवर्षे षड् ऋतव: भवन्ति।
(च) अत्रत्या: मूलनिवासिन: भारतीया: सन्ति।
(छ) प्राचीन राजा भरतस्य नाम्ना अस्माकं देशस्य नाम भारत: अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) अस्मिन् देशे सप्त नद्य: **प्रवहन्ति**।
(ख) भारत देश: संसारस्य **गुरु:** अपि उच्यते।
(ग) अस्माकं देशस्य नाम **भारत:** अस्ति।
(घ) जननी जन्मभूमिश्च **स्वर्गादपि** गरीयसी।
(ङ) प्रकृतिदेव्या: भारते महती **कृपा** अस्ति।
(च) **षड्भि: ऋतुभि:** विद्यमानम् **ऋतुचक्रम्** अत्रैव परिवर्तते।

3. नीचे लिखे शब्दों के हिंदी अर्थ लिखिए और वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) जननी = **माता**
वाक्य– यथा अस्माकं **जननी** अस्मान् पालयति तथैव भारतभूमि: अपि अस्मान् पालयति।
(ख) यत् = **कि**
वाक्य– केनापि उक्तम् अस्ति **यत्** जननी स्वर्गादपि श्रेष्ठा अस्ति।
(ग) अस्माकम् = **हमारा**
वाक्य– अस्माकं देश: भारत: विश्वगुरुरपि कथ्यते।
(घ) गरीयसी = **श्रेष्ठ (बढ़कर)**
वाक्य– जन्मभूमि: स्वर्गादपि **गरीयसी।**
(ङ) धरित्री = **धरती**
वाक्य– अस्माकं देशस्य **धरित्री** महापुरुषाणां जननी अस्ति।
(च) नगाधिराज: = **पर्वतों का राजा**
वाक्य– भारतदेशस्य उत्तर भागे अस्ति **नगाधिराज:**।

4. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) भारत देश के निवासी भारतीय कहलाते हैं।
(ख) राजा भरत के नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ।
(ग) भारतवर्ष की भूमि में अनेक महापुरुषों और महावीरों ने जन्म लिया।
(घ) भारत देश में सात नदियाँ बहती हैं।
(ङ) हिमालय भारत की पहरेदार की तरह रक्षा करता है।

5. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) अस्मान् स्वदेश: प्राणपनेनापि प्रिय: अस्ति।
(ख) भारतदेश: स्वर्गादपि शोभन: अस्ति।
(ग) राज्ञी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती प्रभृतय: वीराङ्गना: अस्यां भूमौ अजायन्।
(घ) भारतभूमि: अस्मान् मातेव पालयति।
(ङ) वयं धन्या: स्म: यत् अस्यां भूमौ अजायाम।

6. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर–

(क) पुरा	सनातन:
(ख) सुन्दर:	रमणीय:
(ग) पृथ्वी	भूमि:
(घ) शैल:	नग:
(ङ) सुधांशु:	निशापति:

7. 'भारतदेश' पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर– अस्माकं देश: भारत: अति प्रिय: अस्ति। अस्य 'भारत' इति नाम प्राचीन राजा भरतस्य नाम्ना

प्रसिद्धः अभवत्। अस्यां भारतभूमौ देवाः अपि जन्म वाञ्छन्ति। भारतदेशः महापुरुषाणां, महावीराणां जन्मभूमिः अस्ति। अस्यां भूमौ राज्ञी लक्ष्मीबाई, चाँद बीबी, दुर्गावती, इन्दिरा गान्धिः प्रभृतयः वीराङ्गनाः अपि जन्म अलभन्। अत्र गङ्गा, यमुना, गोदावरी, कावेरी, नर्मदा प्रभृतयः नद्यः प्रवहन्ति। भारतदेशस्य उत्तर भागे हिमालयः नगाधिराजः विराजते यः अस्माकं प्रहरीव सदा रक्षां करोति। अत्र षड्ऋतुणां चक्रमपि परिवर्तते। भारतदेशः विश्व गुरुरपि उच्यते। सुजला सुफला शस्य श्यामला अस्य देशस्य भूमिः देवतानां मनांसिहरति। अपि उक्तं च—''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

एकादशः पाठः

आदर्श मैत्री (Friend)

हिन्दी अनुवाद

गुरुः ..... गच्छेत्।

अनुवाद—गुरु सन्दीपन मुनि के आश्रम में सुदामा और कृष्ण विद्याध्ययन करते थे। समय बीतने पर श्रीकृष्ण तो द्वारकाधीश हो गए किंतु सुदामा एक निर्धन ब्राह्मण ही रहे। धीरे-धीरे सुदामा बहुत गरीब हो गए। उनका परिवार भूख से पीड़ित हो गया। सुदामा की पत्नी जानती थी कि उसके पति के मित्र श्रीकृष्ण हैं। इसलिए एक बार उसने अपने पति से निवेदन किया कि वह सहायता के लिए श्रीकृष्ण के पास जाए।

स्वपत्न्याः .....आलिङ्गतवान्।

अनुवाद—अपनी पत्नी के आग्रह से सुदामा श्रीकृष्ण के पास जाने के लिए तैयार हो गए। उनकी पत्नी कुछ भेंट लेने के लिए पास के घर गई और वहाँ से चार मुट्ठी जितने चावल ले आईं। चावलों को एक कपड़े में बाँधकर सुदामा द्वारिका की तरफ चल दिए। सुदामा की दशा देखकर द्वारपालों ने उन्हें बाहर ही रोक दिया, किंतु संदेशवाहक ने कृष्ण को सुदामा नाम बताया तब श्रीकृष्ण दौड़ते हुए बाहर आए और अपने मित्र को बाँहों में भरकर आलिंगन किया।

पुनः ..... आरभत्।

अनुवाद—फिर महल ले जाकर श्रीकृष्ण ने अपने मित्र के पैरों को धोया और स्नान-भोजन कराकर उन दोनों मित्रों ने बातचीत की। श्रीकृष्ण यह जान गए कि सुदामा कुछ छिपा रहे हैं। इसलिए उन्होंने उन्हें पूछा—''क्या भेंट लाए हो दो मुझे।'' लज्जित सुदामा उन चावलों को श्रीकृष्ण को देने के लिए उत्साहित नहीं थे। किंतु श्रीकृष्ण स्वयं ही चावलों को लेकर प्रेम से खाने लगे।

लजया ..... आदर्श मैत्री।

अनुवाद—लज्जा (शर्म) के वशीभूत होकर सुदामा ने मित्र से कुछ भी नहीं माँगा। दो दिन बाद निराश होकर अपने घर जाने के लिए श्रीकृष्ण की आज्ञा माँगी। श्रीकृष्ण के महल से चलकर जब सुदामा अपनी कुटिया को लौटे तब अपनी कुटी के स्थान पर भव्य महल को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। यह देखकर उन्होंने जाना कि यह सब मित्र कृष्ण की कृपा से ही हुआ। ऐसी होती है आदर्श मैत्री।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) कृष्णस्य मित्रस्य नाम सुदामा आसीत्।
(ख) सुदामा कृष्णयोः गुरोः नाम सन्दीपन मुनिः आसीत्।
(ग) कृष्णस्य समीपे सहायतार्थं सुदामा अगच्छत्।
(घ) स्वकुटीरस्य स्थाने भव्यप्रासादं दृष्ट्वा सुदामा विस्मितः अभवत्।
(ङ) सुदामा अजानत् यत् इदं सर्वं तस्य मित्रस्य श्रीकृष्णस्य कृपया एवं अभवत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) सुदामा एकः **निर्धनः** ब्राह्मणः एव अतिष्ठत्।
(ख) तण्डुलान् एकस्मिन् **वस्त्रे बद्धवा सुदामा द्वारिकां** प्रति अचलत्।
(ग) श्रीकृष्णः **धावन्** बहिर्आगच्छत्।
(घ) दीयतां **महयम्।**
(ङ) इदृशी भवति **आदर्श मैत्री**।

3. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर– (क) क्षुधा—व्यतीते समये सुदामायाः परिवारः **क्षुधा** पीडितः अभवत्।
(ख) धावन्—सुदामायाः आगमनस्य समाचारं ज्ञात्वा श्रीकृष्णः **धावन्** बहिर्आगच्छत्।
(ग) वार्ता—सुदामाकृष्णाभ्यां बहुकालपर्यन्तं **वार्ता** कृता।
(घ) प्रासादम्—स्वकुटीरस्य स्थाने भव्य **प्रासादम्** दृष्ट्वा सुदामा चकितः अभवत्।
(ङ) कुटीरः—सुदामायाः **कुटीरः** नद्याः तीरे आसीत्।

4. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) आश्रमे सुदामा कृष्णौ अपठताम्।
(ख) सुदामा अति निर्धन: अभवत्।
(ग) सुदामा चतुर्मुष्टि: तण्डुलान् अनयत्।
(घ) द्वारपालेन स: बहिरेव अवरोधित:।
(ङ) श्रीकृष्ण: अकथयत् यत् तण्डुलान् मह्यं देहि।

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए–

उत्तर– (क) करते हैं (दो) (ख) धीरे
(ग) कुछ (घ) शर्माना

द्वादशः पाठः

राष्ट्रियचिह्नानि (National Symbols)

हिन्दी अनुवाद

भारतराष्ट्रस्य ..... द्योतकम् अस्ति।

अनुवाद—भारत राष्ट्र के निम्नलिखित राष्ट्रीय चिह्न हैं— तीन रंग का राष्ट्रध्वज (तिरंगा), राष्ट्रगान, कमल का फूल, मोर और बाघ।

1. त्रिवर्णकः राष्ट्रध्वजः
(तीन रंग का राष्ट्रध्वज (तिरंगा))

अस्माकं राष्ट्रध्वजः ..... द्योतकम् अस्ति।

अनुवाद—हमारा राष्ट्रध्वज तीन रंगों से युक्त है। ध्वज में तीन पट्टियाँ विराजमान हैं। पहली पट्टी केसरिया रंग में। दूसरी पट्टी सफेद रंग में। तीसरी पट्टी हरे रंग में है। सफेद पट्टी के बीच में अशोक चक्र विद्यमान है।

ध्वज (झंडे) के तीन रंग अर्थवान हैं अर्थात् इनका अपना-अपना अर्थ है। जैसे कि केसरिया रंग उत्साह, ज्ञान और सौहार्द को प्रकाशित करता है। सफेद रंग शांति, सत्य और निर्मलता को प्रकाशित करता है। हरा रंग सुख का, समृद्धि और विकास का सूचक है। ध्वज के मध्य भाग में विराजमान अशोक चक्र धर्म का, सत्य का और अहिंसा का द्योतक है।

2. राष्ट्रगानम् (राष्ट्रगान)

अस्माकं ..... गेयं भवति।

अनुवाद—हमारा राष्ट्रगान विश्वकवि कवींद्र रवींद्र ने ''जन-गण-मन'' रचा है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रगान का सम्मान करता है। सभा की समाप्ति पर राष्ट्रगान का गाना आवश्यक है। विद्यालय में भी प्रार्थना के बाद प्रतिदिन राष्ट्रगान गाया जाता है। राष्ट्रगान श्रद्धा के योग्य है। श्रद्धा से ही यह गाया जाता है।

3. कमलपुष्पम् (कमल का फूल)

कमलं .....वितरति।

अनुवाद—कमल हमारा राष्ट्रीय फूल है। कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी यह कीचड़ रहित और स्वच्छ होता है। यह सौंदर्य का, कोमलता का, निर्मलता का और शांति का संदेश बाँटता है।

4. मयूरः (मोर)

अयम् अस्माकं ..... अस्ति।

अनुवाद—यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। इसका सौन्दर्य और नृत्य प्रसिद्ध है। यह सुंदरता का, शिक्षा का और कला का द्योतक (प्रतीत) है। साँप को खाना इसका जन्मजात गुण है। विषकारकों (जहरीले तत्व) का और उपद्रवी तत्वों का विनाश हो, इसका मनुष्यों के लिए यह शुभ संदेश है।

5. व्याघ्रः (बाघ)

पुरा ..... विद्यन्ते।

अनुवाद—प्राचीन काल में भारत का राष्ट्रीय पशु शेर ही था। इस समय बाघ राष्ट्रीय पशु स्वीकार किया गया है। यह पशुओं में अति तेजस्वी और पराक्रमी है। राष्ट्र के लोग शक्ति संपन्न हों, ऐसा इसका संदेश है।

ये हमारे राष्ट्रीय चिह्न राष्ट्र के गौरव को धारण करने वाले स्वीकार किए गए हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) राष्ट्रध्वजे पट्टिकानां तिस्र संख्या विद्यते।
(ख) अस्माकं राष्ट्रगानं विश्वकवि कवीन्द्रेण रवीन्द्रेन लिखितम्।
(ग) अस्माकं राष्ट्रियं पुष्पं कमलपुष्पम् अस्ति।
(घ) अस्माकं राष्ट्रिय: पशु: व्याघ्र: अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) ध्वजे **त्रिपट्टिका:** विराजन्ते।
(ख) **मयूर:** अस्माकं राष्ट्रिय: खग: अस्ति।
(ग) कमलम् अस्माकं राष्ट्रियं **पुष्पम् अस्ति।**
(घ) **व्याघ्र: अस्माकं** राष्ट्रिय: पशु: इति स्वीकृत: विद्यते।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) अस्माकं राष्ट्रध्वज: त्रिवर्णकु: अस्ति।
(ख) मयूर: नृत्यति।

(ग) कमल पुष्पं पङ्के जायते।
(घ) मयूरस्य सौन्दर्यं नृत्यं च अति प्रसिद्धमस्ति।
(ङ) भारतस्य राष्ट्रिय: पशु: व्याघ्र: अस्ति।

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) पङ्कज: राजीव:
(ख) शकुन्त: अण्डज:
(ग) सुमन: कुसुम:

त्रयोदशः पाठः

हिन्दी अनुवाद

वार्तालाप: ..... समर्थो भवति।

अनुवाद— (बातचीत)

(अध्यापक कक्षा में प्रवेश करते हैं।)

अध्यापक—क्या सभी छात्र उपस्थित हैं?

कक्षानायक—हाँ श्रीमान्! सभी उपस्थित हैं।

अध्यापक—आज मैं 'ज्ञान' के विषय में पढ़ाऊँगा।

कक्षानायक—हे श्रीमान्! ज्ञान क्या होता है?

अध्यापक—'ज्ञान' यह श्रेष्ठ, यह श्रेष्ठ नहीं। ऐसा जिस तत्व के द्वारा पुरुष हानि-लाभ को और यह मेरा, यह दूसरे का, यह लाभकारी है, यह लाभकारी नहीं है, इस विषय में जानने के लिए समर्थ होता है, यही ज्ञान सिद्ध किया जाता है। वह ज्ञान चेतना में निहित है।

कक्षानायक—हे श्रीमान्! चेतना क्या होती है?

अध्यापक—हे बालक! सारे ज्ञान का आधार चेतना में ही होता है। सावधानी से सुनो। सारे विश्व के ज्ञान का आधार प्राणी और तत्व से स्थित ज्ञान ही 'चेतना' है, ऐसा जानो। शुद्ध चेतना ही शुद्ध ज्ञान होता है। चेतना के बिना ज्ञान का विकास नहीं हो सकता है। इसलिए पुरुष में पहले ईश्वर के द्वारा चेतना प्रदान की गई। चेतना के तत्व के द्वारा स्वत: ज्ञान उत्पन्न होता है। ज्ञान को इकट्ठा करने में गुरु की कृपा की आवश्यकता होती है।

कक्षानायक—हे अध्यापक महोदय! गुरु की परिभाषा क्या है?

अध्यापक—हे छात्रो! जो अंधकार से प्रकाशित करता है अर्थात् अंधेरे से बाहर निकालता है वह गुरु होता है। गुरु ही हमारी ज्ञान-चक्षुओं को खोलने में समर्थ है और कोई भी समर्थ नहीं है। गुरु की आज्ञा का हमेशा पालन करना चाहिए। कभी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। हमारे तीन देव ही सम्मान के योग्य हैं।

कक्षानायक—हे श्रीमान्! तीन देव कौन हैं?

अध्यापक—मातारूपी देव, पितारूपी देव और आचार्य रूपी देव, ये तीन देव हैं। हमें इनकी आज्ञा हमेशा पालनी चाहिए। गुरु ही हमें अज्ञान के अंधकार से उठाने में, उद्धार करने में समर्थ होता है।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–

उत्तर– (क) सकल ज्ञानस्य आधार: चेतना भवति।
(ख) गुरु: अस्मान् अज्ञानान्धकारात् निस्सारयति प्रकाशं च ददाति।
(ग) मातृदेव:, पितृदेव: आचार्य देवश्चेति त्रिदेवा: भवन्ति।
(घ) ज्ञानं चेतनायां निहितम् अस्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) किं सर्वे **छात्रा: उपस्थिता:** सन्ति?
(ख) शुद्धचेतना एवं **शुद्ध ज्ञानं** भवति।
(ग) **य: अन्धकारात्** प्रकाशयति स: गुरु: भवति।
(घ) अस्माभि: एतेषां **आज्ञा सर्वदा** पालनीया।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) गुरु: एव अज्ञानताम् उद्धर्तुं समर्थ: अस्ति।
(ख) सर्वे छात्रा: सावधानतया शृण्वन्तु।
(ग) अहम् अद्य चेतनाया: विषये युष्मान् पाठयिष्यामि।
(घ) माता-पिता गुरु: च आदरणीया: भवन्ति।
(ङ) अस्माभि: गुरो: आज्ञाया: सदैव पालनं करणीयम्।

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) राष्ट्रध्वज:—अस्माकं **राष्ट्रध्वज:** त्रिवर्णक: अस्ति।
(ख) कमलम्—**कमलं** शान्ते: सन्देशं वितरति।
(ग) मयूर:—**मयूर:** वर्षाकाले मग्नो भूय नृत्यति।
(घ) व्याघ्र:—**व्याघ्र:** पराक्रमी पशु: अस्ति।
(ङ) चक्रम्—राष्ट्रध्वजे अशोक **चक्रम्** अस्ति।

ज्ञानं चेतनायाम् (Knowledge Fellings)

4. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) हमारे त्रिदेव ही सम्मान के योग्य है।
(ख) गुरु की आज्ञा हमेशा पालनी चाहिए।
(ग) गुरु हमें अज्ञानता के अंधकार से उठाने में समर्थ है।
(घ) चेतना के बिना ज्ञान का विकास नहीं हो सकता।

5. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य-रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) आज्ञा—गुरो: **आज्ञा** सदा पालनीया।
(ख) सम्माननीया:—अस्माकं त्रिदेवा: एव **सम्माननीया:** सन्ति।
(ग) त्रिदेवा:—मातृदेव:, पितृदेव: आचार्य देव: च इत्येते **त्रिदेवा:** सन्ति।
(घ) चेतना—शुद्धा **चेतना** एवं शुद्धं ज्ञानं भवति।

चतुर्दशः पाठः

महर्षिः दधीचिः (Maharishi Dadhichi)

हिन्दी अनुवाद

सर्वेषु ..... शक्नोति।

अनुवाद—सभी परोपकारियों में महर्षि दधीचि का नाम अग्रणीय है। दधीचि के समान त्याग में न कोई भी हुआ न होगा। प्राचीन काल में देवों और राक्षसों का भयंकर संग्राम हुआ। उस संग्राम में देवों के नायक इन्द्र थे और राक्षसों का नायक वृत्तासुर था। उस संघर्ष में देवों के नायक इन्द्र पराजित हो गए। पराजित देवों ने भगवान विष्णु के पास जाकर अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। देवों की प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु बोले—''वर माँगो।'' देव बोले—''प्रभु! वृत्तासुर नाम के राक्षस ने इंद्र की सारी देवसेना को हरा दिया। अब आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं।''

भगवान् ..... दास्यति।

अनुवाद—भगवान विष्णु बोले—''हे देवो! इस समय महर्षि दधीचि सभी ऋषियों के शिरोमणि हैं। व्रत, उपासना और तपस्या से उन महात्मा की देह पूरी तरह पवित्र है। उनकी देह की हड्डियों से यदि वज्र का निर्माण हो जाए तो उस वज्र से वृत्तासुर का वध हो सकता है। इसलिए जल्दी जाकर महर्षि का शरीर माँगो। वे परोपकार के लिए अपना शरीर अवश्य देंगे।''

देवाः ..... भविष्यति।''

अनुवाद—देव महर्षि दधीचि के पास गए और वृत्तासुर के वध के लिए महर्षि का शरीर माँगा। दधीचि ने कहा—''हे देवो! देवकार्य के लिए शरीर छोड़ने में मुझे लेशमात्र भी दु:ख नहीं होगा।''

एवम् ..... विभूतयः।

अनुवाद—इस प्रकार कहकर महर्षि दधीचि ने भगवान के ध्यान में अपना शरीर छोड़ दिया। गायों ने उनके शरीर को जीभ से चाटा। मात्र हड्डियों के बचने पर देव शिल्पी विश्वकर्मा ने उन हड्डियों से वज्र का निर्माण किया। उस वज्र के द्वारा देवराज इंद्र ने वृत्तासुर का वध किया। इस महान त्याग की महिमा के कारण महर्षि दधीचि आज भी सादर सम्मानित होते हैं और यशरूपी शरीर के द्वारा आज भी जीवित हैं। सत्य ही कहा है—''सज्जनरूपी विभूतियाँ परोपकार के लिए होती हैं।''

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) सर्वेषु परोपकारिषु महर्षे: दधीचे: नाम अग्रगण्यम् अस्ति।
(ख) देवानां नायक: इन्द्र: आसीत्।
(ग) संघर्षे देवानां नायक: इन्द्र: पराजित: अभवत्।
(घ) पराजिता: देवा: स्वरक्षायै भगवान् विष्णो: प्रार्थनाम् अकुर्वन्।
(ङ) महर्षि: दधीचि: परोपकाराय स्वदेहम् अत्यजत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) प्राचीनकाले देवानां राक्षसाणां च **भयंकर:** संग्रामोऽभूत्।
(ख) तस्मिन् संघर्षे **देवानां नायक:** इन्द्र: पराजित:।
(ग) स: अवश्यं **परोपकारार्थं** स्वदेहं दास्यति।
(घ) महर्षि: दधीचि: भगवति ध्याने **स्वशरीरम्** अत्यजत्।
(ङ) महर्षि: दधीचि: अद्यापि सादरं **सम्मानयते**।

3. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) दधीचि के समान त्याग में न हुआ न होगा।
(ख) संघर्ष में देवनायक इंद्र पराजित हो गए।

(ग) दधीचि परोपकार के लिए अपनी देह अवश्य देंगे।

(घ) देवकार्य के लिए शरीर छोड़ने में मुझे लेशमात्र भी दु:ख नहीं होगा।

(ङ) गायों ने उनका शरीर जीभ से चाटा।

4. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– (क) प्राचीनकाले देवानां राक्षसाणां च भयंकर: संग्रामोऽभूत्। (✓)

(ख) देवानां नायक: वृत्तासुर: आसीत्। (✗)

(ग) संग्रामे देवा: विजयी अभवन्। (✗)

(घ) महर्षि: दधीचि: परोपकाराय स्वसम्पत्तिम् अयच्छत्। (✗)

(ङ) विश्वकर्मा अस्थिभि: वज्रस्य निर्माणम् अकरोत्। (✓)

5. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर– (क) सत्वरम्—भो बालक! **सत्वरं** गच्छ, वैद्यम् आहूय आनय।

(ख) सताम्—जीवनस्योपकारार्थं **सतां** सङ्गति: कुरु।

(ग) श्रुत्वा—देवानां वार्तां **श्रुत्वा** दधीचिना स्वशरीरम् अत्यजत्।

(घ) एतेन—अस्थिभि: निर्मितेन **एतेन** वज्रेण इन्द्र: वृत्तासुरस्य वधं चकार।

(ङ) संग्राम:—देवानां राक्षसाणां च भयंकर: **संग्राम:** अभवत्।

6. निम्नलिखित शब्दों को उनके अर्थ से मिलाइए–

उत्तर– न भूता	**न हुआ**
संघर्षे	**लड़ाई में**
उपगम्य	**जाकर**
सकलाम्	**सारी**
मुञ्चतो	**छोड़ने में**
अलिह्य	**चाटने लगीं**

पञ्चदशः पाठः

स्वामी विवेकानन्दः (Swami Vivekanand)

हिन्दी अनुवाद

अस्माकं .....तिथौ अभवत्।

अनुवाद—हमारा देश संसार में सबसे महान है। इस भूमि में अनेक महापुरुष हुए। उनमें दयानंद सरस्वती, गांधी जी, पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० श्रद्धानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, अरविन्द घोष मुख्य हैं।

स्वामी विवेकानंद भारतवर्ष के एक महान संत और राष्ट्रप्रेमी थे। इनका जन्म बंगाल राज्य के कोलकाता नगर में 1863 ई० में जनवरी महीने की बारहवीं तारीख में हुआ।

विवेकानन्दस्य .....प्राप्स्यथ।''

अनुवाद—विवेकानंद के पिता का नाम विश्वनाथदत्त था। इनकी माता भुवनेश्वरी देवी थीं। बचपन में इनका नाम नरेंद्र दत्त था। नरेंद्र के गुरु का नाम रामकृष्ण परमहंस था। रामकृष्ण एक सिद्ध पुरुष और काली देवी के पुजारी थे। रामकृष्ण ने ही इनका नाम विवेकानंद किया।

स्वामी रामकृष्ण को गुरु मानकर विवेकानंद ने इनकी आज्ञा शिरोधार्य करके संपूर्ण भारत में भ्रमण किया। इनके हृदय में गरीबों के प्रति प्रेम था। वे कहते थे—''तुम पूजास्थल में भगवान को नहीं प्राप्त कर सकोगे अपितु दरिद्र की सेवा में ही प्राप्त कर पाओगे।''

1893 ईस्वीये ..... अत्यजत्।

अनुवाद—1893 ई० में विवेकानंद भारतीय संस्कृति की पताका लेकर अमेरिका देश को गए। वहाँ उन्होंने शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया। उस सम्मेलन में उनके भाषण को सुनकर वहाँ उपस्थित लोग बहुत ही प्रभावित हुए। अनेक विदेशी तो इनके शिष्य हो गए।

ये महापुरुष हमारे बीच अधिक समय तक नहीं रहे। इन्होंने जुलाई महीने की 1902 ई० में अपने शरीर को छोड़ दिया।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

उत्तर– (क) बाल्यकाले विवेकानन्दस्य नाम नरेन्द्रदत्त: आसीत्।

(ख) विवेकानन्दस्य जन्म 1863 तमे ख्रीष्टाब्दे जनवरी मासस्य द्वादश तिथौ अभवत्।

(ग) विवेकानन्दस्य मातु: नाम भुवनेश्वरी देवी आसीत्।

(घ) विवेकानन्द: भारतीय संस्कृते: पताकां गृहीत्वा अमेरिका देशे अगच्छत्।

(ङ) 1902 ईस्वीये वर्षे स: निजदेहम् अत्यजत्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) अस्माकं देश: **संसारे महानतम:** अस्ति।
(ख) विवेकानन्दस्य पितु: नाम **विश्वनाथ दत्त:** आसीत्।
(ग) विवेकानन्दस्य गुरो: नाम **रामकृष्ण परमहंस:** आसीत्।
(घ) अनेका: वैदेशिका: तु **तस्य शिष्या:** अभवन्।
(ङ) स: जौलाई मासस्य **1902** ईस्वीये वर्षे **निज देहम्** अत्यजत्।

3. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

उत्तर– (क) राष्ट्रप्रेमी—महात्मा गान्धि: अहिंसाया: उपासक: **राष्ट्रप्रेमी** च आसीत्।
(ख) दरिद्रस्य—धनश्यामदास: प्रतिदिनं **दरिद्रस्य** सेवां करोति।
(ग) संस्कृते:—स्वामी विवेकानंद: भारतीय **संस्कृते:** पताकां गृहीत्वा अमेरिका देशे अगच्छत्।
(घ) प्रभाविता:—विवेकानन्दस्य धर्मस्योपरि व्याख्यानं श्रुत्वा वैदेशिका: बहु **प्रभाविता:** अभवन्।
(ङ) चिरकालम्—विवेकानन्द महाभाग: अस्माकं मध्ये **चिरकालं** न अतिष्ठत्।

4. वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) स्वामी विवेकानन्द: भारतस्य महान् सन्त: आसीत्।
(ख) विवेकानन्दस्य जन्म कोलकाता नगरे अभवत्।
(ग) विवेकानन्दस्य माता भुवनेश्वरी देवी आसीत्।
(घ) विवेकानन्द: भारतीय संस्कृते: उपासक: आसीत्।
(ङ) तत्र जना: तं श्रुत्वा बहु प्रभाविता: अभवन्।

5. निम्नलिखित शब्दों की हिन्दी लिखिए–

उत्तर– (क) ईस्वी में (ख) मानकर
(ग) गरीबों को (घ) लेकर
(ङ) सुनकर (च) छोड़ा

6. निम्नलिखित वाक्यों को सही कीजिए और पुन: लिखिए–

उत्तर– (क) अस्माकं देश: संसारे महानतम: अस्ति।
(ख) स्वामी विवेकानन्दस्य जन्म कोलकाता नगरे अभवत्।
(ग) अस्य गुरु: स्वामी रामकृष्ण परमहंस: अस्ति।
(घ) अनेका: वैदेशिका: तु अस्य शिष्या: अभवन्।

षोडशः पाठः

जीवनोद्देश्यः (Aim of Life)

हिन्दी अनुवाद

संसारे ..... करणीयम्।

अनुवाद—इस संसार में मानवजीवन दुर्लभ है। मानव जीवन में तीन प्रमुख उद्देश्य हैं—

प्रथम उद्देश्य—परिश्रम। परिश्रम के बिना मानव शरीर बेकार लगता है। जिस देश के लोग परिश्रम को श्रेष्ठ मानते हैं, वे सफलता प्राप्त करते हैं। बच्चों के ज्ञान एवं विज्ञान के लिए परिश्रम की शिक्षा परम आवश्यक है अन्यथा हमारा देश विकास को प्राप्त नहीं होगा। लोग संसार की उन्नति के लिए परिश्रम करें। 'परिश्रम करने वाले पुरुषरूपी सिंह को ही लक्ष्मी मिलती है।' इस सिद्धांत के द्वारा ही हमें परिश्रम अवश्य करना चाहिए।

द्वितीयोद्देश्यः ..... वैकुण्ठे।

अनुवाद—भक्ति। सुबह से लेकर शाम तक परिश्रम करके देवों की आराधना, पूजा करनी चाहिए। सुबह ब्रह्ममुहूर्त में बिस्तर छोड़कर नित्यक्रिया के बाद परमेश्वर का स्मरण और ध्यान करना चाहिए। शास्त्र में भक्ति के नौ प्रकार होते हैं। इसे विद्या भक्ति अर्थात् नौ प्रकार की भक्ति भी कहते हैं। उनमें केशव-कीर्तन सबसे श्रेष्ठ भक्ति है। श्रीकृष्ण ने गीता में इसका ही महत्व प्रतिपादित (स्पष्ट) किया है। श्रीकृष्ण अपने अंदर ही हैं वैकुण्ठ में नहीं।

तृतीयोद्देश्यः ..... इति।

अनुवाद—मानव का सार्थक कर्म। जो पढ़ा, वह पढ़ा दिया अर्थात् थोड़ा-थोड़ा संग्रह करके दान करते रहना चाहिए। संसार में अनेक वस्तुएँ दान के लिए हैं किंतु विद्या का दान महादान होता है। क्योंकि यह सभी धनों में मुख्य धन होता है। यह तो खर्च करने पर रोज बढ़ता है कभी नष्टता को प्राप्त नहीं होता है अर्थात् कभी नष्ट नहीं होता। अत: विद्याध्ययन और अध्यापन ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए–

उत्तर– (क) भक्तिः नवप्रकाराः भवति।
(ख) मानवस्य सार्थक कर्मः अस्ति यत् यद् अधीतं तत् अध्यापितम् अर्थात् किञ्चित् किञ्चित् संग्रहं कृत्वा दानं कुर्यात्।
(ग) विद्यादानेन वृद्धित्वं प्राप्नोति।
(घ) केशव-कीर्तनं श्रेष्ठतमा भक्तिः अस्ति।
(ङ) द्वितीयो उद्देश्यः अस्ति भक्तिः।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) संसारे **नरजीवनं** दुर्लभम् अस्ति।
(ख) **उद्योगं** विना मानवशरीरं व्यर्थं प्रतीयते।
(ग) **किञ्चित् किञ्चित् संग्रहं** कृत्वा दानं करणीयम्।
(घ) **इदं तु व्यये** कृतेऽपि नित्यं वर्द्धते।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) संसारे मानवजीवनं दुर्लभम् अस्ति।
(ख) मानवशरीरेण उपकारं करणीयम्।
(ग) विद्यादानं श्रेष्ठं दानं भवति।
(घ) विद्यादानेन कदापि क्षयं न याति।
(ङ) अस्माभिः उद्योगः करणीयः।

4. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) विद्यादानम्—सर्वेषु दानेषु **विद्यादानं** महादानम् अस्ति।
(ख) नवधाभक्तिः—भक्तेः नव प्रकाराः सन्ति एनां **नवधाभक्तिरपि** उच्यते।
(ग) शय्यात्यागम्—सूर्योदयात् पूर्व मेव **शय्यात्यागं** करणीयम्।
(घ) सार्थकः—मनुष्यस्य **सार्थकः** कर्मः अस्ति यत् यद् पठितं तत् अध्यापितम्।

5. प्रथम उद्देश्य का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– अनुवाद—परिश्रम। परिश्रम के बिना मानव शरीर बेकार लगता है। जिस देश के लोग परिश्रम को श्रेष्ठ मानते हैं, वे सफलता प्राप्त करते हैं। बच्चों के ज्ञान एवं विज्ञान के लिए परिश्रम की शिक्षा परम आवश्यक है अन्यथा हमारा देश विकास को प्राप्त नहीं होगा। लोग संसार की उन्नति के लिए परिश्रम करें। 'परिश्रम करने वाले पुरुषरूपी सिंह को ही लक्ष्मी मिलती है।' इस सिद्धांत के द्वारा ही हमें परिश्रम अवश्य करना चाहिए।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) संध्या (ख) अज्ञानम्
(ग) अनित्यम् (घ) पुरातनः

सप्तदशः पाठः

विजयादशमी (Vijayadashmi)

हिन्दी अनुवाद

भारतीयाः ..... मानयन्ति।

अनुवाद— भारतीय उत्सव प्रिय होते हैं। नाना प्रकार के भारतीय त्योहारों में 'विजयादशमी' विशेष त्योहार है। इस उत्सव का आयोजन आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि में होता है। इसी दिन ही राम ने रावण का वध किया। लोग राम को मर्यादा का, सत्य का और सदाचार का प्रतीक मानते हैं।

इसलिए रावण के ऊपर श्रीरामचन्द्र की विजय के कारण इस उत्सव का प्रचलन हुआ। इस दिन भारतीय शस्त्रों की पूजा करते हैं। इस दिन भारत के गाँव-गाँव और नगर-नगर में रामलीला का प्रदर्शन होता है। रामलीला में अधर्म और अहंकार के प्रतीक रावण का अग्निदाह होता है अर्थात् रावण को जलाया जाता है। लोग रामलीला देखने और रामकथा को सुनने के लिए एकत्रित होते हैं। लोग इस उत्सव को पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं।

विजयादशम्यः ..... इति।

अनुवाद—विजयदशमी के उत्सव से यह शिक्षा भी मिलती है कि धर्म ही जीतता है और अधर्म का भयंकर परिणाम होता है। इसलिए धर्म का आचरण करना ही श्रेष्ठ है। बंगाल राज्य में यह उत्सव दुर्गापूजा के रूप में प्रचलित है। इस अवसर पर शक्तिरूपा, सिंह वाहिनी, दुर्गादेवी की पूजा की जाती है। यह उत्सव रामकथा को आधार मानकर अथवा दुर्गासप्तशती कथा को आधार मानकर हो, किंतु यह अन्याय के ऊपर न्याय की विजय को सूचित करता है। यहाँ संपूर्ण प्रतीक में असत्य की पराजय और सत्य की विजय निहित है। सब यही है—

''मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चलो।''

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) विजयादशमी उत्सवस्य आयोजनम् आश्विन मासस्य शुक्ल पक्षस्य दशम्यां तिथौ भवति।

(ख) अस्मिन् दिवसे ग्रामे-ग्रामे नगरे-नगरे च रामलीलाया: प्रदर्शनं भवति।

(ग) अस्मिन् दिवसे बङ्गाल प्रान्ते दुर्गादेव्या: पूजा भवति।

(घ) जना: रामं मर्यादाया:, सत्यस्य सदाचारस्य च प्रतीक: मन्यन्ते।

(ङ) विजयदशम्य: उत्सवात् इयं शिक्षा समुपलभ्यते यत् धर्म: एव ज्यति अधर्म एष च दारुण: परिणाम: भवति अत: सदा धर्माचरणं एव करणीयम्।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) भारतीया: **उत्सवप्रिया:** भवन्ति।

(ख) विजयादशम्या: दिने एव राम: **रावणस्य** वधम् अकरोत्।

(ग) अस्मिन् दिने भारतीया: **शस्त्र पूजनं** कुर्वन्ति।

(घ) अयम् उत्सव: **बङ्गालप्रान्ते** दुर्गापूजारूपेण प्रचलितोऽस्ति।

(ङ) जना: इदम् उत्सवं **पूर्णोत्साहेन** मानयन्ति।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) भारतीया: उत्सवप्रिया: भवन्ति।

(ख) अनेकेषु उत्सवेषु विजयादशम्या: विशिष्ट: महत्व: अस्ति।

(ग) विजयादशम्या: दिने भारतीया: शस्त्रपूजनं कुर्वन्ति।

(घ) भारतीया: रामं मर्यादाया: सत्यस्य सदाचारस्य प्रतीक: मन्यन्ते।

(ङ) धर्मस्य आचरणं श्रेष्ठं भवति।

4. हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) भारतीय उत्सवप्रिय होते हैं।

(ख) नाना प्रकार के भारतीय उत्सवों में 'विजयदशमी' विशिष्ट उत्सव है।

(ग) इस उत्सव का आयोजन आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि में होता है।

(घ) इस दिन भारतीय शस्त्रों की पूजा करते हैं।

5. निम्न शब्दों का प्रयोग करके संस्कृत में वाक्य बनाइए–

उत्तर– (क) उत्सव:—भारतीय उत्सवेषु विजयादशम्या: **उत्सव:** विशिष्ट: अस्ति।

(ख) अधर्म:—जनानां हिंसनं दुराचरणं च **अधर्म:** अस्ति।

(ग) आश्रित्य—रामकथाम् **आश्रित्य** जना: सद्व्यवहारं कुर्वन्ति।

(घ) जनसम्मर्द:—विजयादशम्या: दिने सायंकाले महत् **जनसम्मर्द:** भवति।

(ङ) श्रूयते—एतद् **श्रूयते** यद् अस्मिन् दिने राम: रावणम् अमारयत्।

6. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) पर्व (ख) दशानन:

(ग) रघुपति: (घ) वह्नि:

(ङ) भयङ्कर: (च) अन्धकार:

अष्टदशः पाठः

धनस्य महत्त्वम् (Value of Wealth)

हिन्दी अनुवाद

उक्तं च ..... प्रतिभान्ति।

अनुवाद—और कहा है—

''जिसके पास धन है, वह मनुष्य कुलीन है, वह विद्वान है और वह सुनने योग्य अथवा सुनने वाला गुणी है। वही वक्ता है और वही देखने योग्य है, इस प्रकार सभी गुण सोने (धन) में आश्रित हैं अर्थात् जिसके पास धन है वही इस संसार में सबसे श्रेष्ठ है।''

संसार में सबसे श्रेष्ठ वस्तु धन ही है। धन के बिना कार्य सिद्ध नहीं होते हैं और जीवन का निर्वाह किसी भी प्रकार नहीं होता है। धन के बिना विद्या को प्राप्त नहीं कर सकता है। न्यायालय में न्याय भी नहीं हो सकता है। धन के बिना सभी वस्तुएँ नीरस लगती हैं।

यस्य पार्श्वे ..... धनमेवाश्रयन्ति।

अनुवाद—जिसके पास धन नहीं है उसकी (कोई भी इच्छा) पूर्ति नहीं होती है। धन से लोग सुख सागर को पार करते हैं। गरीबी सारी विपदाओं अथवा परेशानियों का घर है। दरिद्रता में कष्ट सहते हुए मरना और आंतरिक दु:खादि गरीब की आपदाएँ हैं। जिसका धन समाप्त हो जाता है, उसका कोई भी मित्र नहीं होता है। धन के बिना अच्छे

आचरण वाले चंद्रमा रूपी व्यक्ति की चमक भी मलिन हो जाती है। धन के बिना (भाई अथवा मित्र के कहने पर भी) कोई भी विश्वास नहीं करता है। धनहीन व्यक्ति का जीवन बेकार ही है।

प्राचीन काल में मुनियों ने भी धन की आवश्यकता और उपयोगिता को स्वीकार किया है। चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति भी धन से ही संभव है। धन से ही धर्म भी फैलता है। इसलिए सभी को धन अर्जित करना चाहिए। धन से बुरा व्यक्ति भी श्रेष्ठ हो जाता है। संसार में समस्त गुण धन पर ही आश्रित हैं।

अभ्यास:

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

उत्तर– (क) संसारे सर्वश्रेष्ठं वस्तु धनम् अस्ति।
(ख) निर्धनता समस्त आपदानां गृहम् अस्ति।
(ग) धनेन मानवा: सुखसागरं तरन्ति।
(घ) धनेन धर्म: प्रसरति।
(ङ) धनेन अकुलीना: कुलीना: भवन्ति।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) धनं विना सर्वाणि वस्तूनि **नीरसानि** प्रतिभान्ति।
(ख) धनेन जना: **सुखसागरं** तरन्ति।
(ग) **धनहीनस्य जनस्य** जीवनं व्यर्थमेव अस्ति।
(घ) संसारे समस्तगुणा: **धनमेवाश्रयन्ति।**
(ङ) धनेन **अकुलीनाऽपि** कुलीना: भवन्ति।

3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) संसारे सर्वे गुणा: धनमेवाश्रयन्ति।
(ख) यस्य धनं नष्टं भवति, तस्य कश्चित् मित्रं न भवति।
(ग) धनं बिना बान्धव: अपि न विश्वसन्ति।
(घ) प्राचीना: मुनय: अपि धनस्य आवश्यकता उपयोगिता च स्वीकुर्वन्ति।
(ङ) धर्मस्य, अर्थस्य, कामस्य, मोक्षस्य प्राप्ति हेतु: धनम् आवश्यकमस्ति।

4. निम्नलिखित द्वितीय अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– अनुवाद—जिसके पास धन नहीं है उसकी (कोई भी इच्छा) पूर्ति नहीं होती है। धन से लोग सुख सागर को पार करते हैं। गरीबी सारी विपदाओं अथवा परेशानियों का घर है। दरिद्रता में कष्ट सहते हुए मरना और आंतरिक दु:खादि गरीब की आपदाएँ हैं। जिसका धन समाप्त हो जाता है, उसका कोई भी मित्र नहीं होता है। धन के बिना अच्छे आचरण वाले चंद्रमा रूपी व्यक्ति की चमक भी मलिन हो जाती है। धन के बिना (भाई अथवा मित्र के कहने पर भी) कोई भी विश्वास नहीं करता है। धनहीन व्यक्ति का जीवन बेकार ही है।

5. निम्नलिखित शब्दों की वाक्य रचना संस्कृत में कीजिए–

उत्तर– (क) दरिद्र:—पूर्वं मोहन: धनिक: आसीत् परम् अधुना **दरिद्र:** अस्ति।
(ख) बान्धवा:—धनहीने मनुष्ये **बान्धवा:** अपि न विश्वसन्ति।
(ग) सर्वे—**सर्वे** गुणा: काञ्चनमेव आश्रयन्ति।
(घ) कार्याणि—अस्माभि: सदैव **शुभकार्याणि** एव करणीयानि।
(ङ) धर्मोऽपि—धनेन **धर्मोऽपि** प्रसरति।
(छ) पण्डित:—यस्य पार्श्वे धनं भवति स: **पण्डित:** अपि भवति।

6. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) जिसके पास धन है, वह कुलीन है।
(ख) धन के द्वारा सुखसागर को पार करते हैं।
(ग) संसार में समस्त गुण धन पर (में) ही आश्रित हैं।

एकोनविंशतिः पाठः

हिन्दी अनुवाद

माता ..... पन्था।

अनुवाद—भूमि माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।
यह पृथ्वी वीरों के भोगने के लिए है।

सूक्तयः (Good Saying)

जो अपने आपको अच्छा न लगता हो वह दूसरों के साथ न करें।

उदार (दयालु) स्वभाव वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही एक परिवार है।

माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।
विद्वान सभी जगह पूजा जाता है।
वही विद्या है, जो मुक्ति के लिए हो।
स्वभाव अलंघनीय नहीं होना चाहिए।
विनाश के समय बुद्धि विपरीत हो जाती है।
महाजन अर्थात् महान लोग जिससे गए हैं वही रास्ता सही है अर्थात् हमें महान् लोगों के पथ का अनुसरण करना चाहिए।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित सूक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– (क) यह पृथ्वी वीरों के लिए है अर्थात् जो लोग वीर हैं, साहसी हैं, मेहनती हैं, दयालु हैं, धैर्यवान हैं तथा सदचारी हैं; वे ही इसका भोग करते हैं; आनंद से रहते हैं। कायर और आलसी लोग इसका भोग कभी नहीं कर सकते वे तो सिर्फ कल्पनाओं में डूबे रहते हैं।

(ख) जो व्यक्ति ज्ञान से परिपूर्ण होता है, उसकी सब जगह पूजा होती है, मान-सम्मान होता है, जबकि मूर्ख व्यक्ति को कोई भी मुँह नहीं लगाना चाहता है। सब उससे बचते हैं, ऐसे व्यक्ति हमेशा नीचा देखते हैं।

(ग) हमें चाहे कितने भी सुख-सुविधा से पूर्ण वातावरण अथवा साधन मिल जाएँ अथवा वहाँ स्वर्ग से भी बढ़कर आनंद हो, किंतु माता और मातृभूमि से बढकर कुछ नहीं, स्वर्ग तो इनकी गोद में ही है।

(घ) जब व्यक्ति का बुरा समय आता है तो वह सारे कार्य उलटे व गलत करने लगता है, उसकी बुद्धि उल्टी हो जाती है और वह विनाश की तरफ बढ़ता जाता है।

(ङ) वही विद्या सार्थक है जो हमें सही रास्ते पर ले जाए, हमारी मुक्ति का साधन बने, ऐसी विद्या कभी ग्रहण न करें, जो गलत ज्ञान से पूर्ण हो और बंधनों में बाँधे रखे।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) माता **भूमिः** पुत्रोऽहं **पृथिव्याः**।
(ख) **उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।**
(ग) विद्वान् **सर्वत्र** पूज्यते।
(घ) विनाशकाले विपरीत **बुद्धिः**।
(ङ) महाजनाः येन गतः सः **पन्थाः।**

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

उत्तर– (क) अहं पृथिव्याः पुत्रः अस्मि।
(ख) एषा पृथ्वी वीरभोग्या अस्ति।
(ग) विदुषः सर्वत्र पूजा भवति।
(घ) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

4. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

उत्तर– (क) सुतः वत्सः
(ख) शूरः योद्धा
(ग) दुर्जनः शठः
(घ) नाशः ध्वंसः
(ङ) अम्बा माता

विंशतिः पाठः

अभ्यासः

1. संधि किसे कहते हैं? इसके भेद लिखिए।

उत्तर– दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार, परिवर्तन या बदलाव होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे—विद्या + आलयः = विद्यालयः। इसके तीन भेद हैं—स्वर संधि, व्यंजना संधि तथा विसर्ग संधि।

2. स्वर संधि और व्यञ्जन संधि में अंतर बताइए।

उत्तर– जब दो स्वरों में मेल होता है तो स्वर संधि होती है। जैसे—हिम + आलयः = हिमालयः। यहाँ 'अ' तथा 'आ' स्वर में संधि है, इसलिए यहाँ स्वर संधि है, जबकि व्यंजन संधि में व्यंजन के परे व्यंजन आने

सन्धिः (Combination)

पर अथवा स्वर के आने पर जो विकार उत्पन्न होता है तो उसमें 'व्यंजन संधि' होती है; जैसे—सत् + जनः = सज्जनः। यहाँ व्यंजन का व्यंजन में मिलने पर विकार उत्पन्न होने से दूसरा वर्ण बन जाता है। ऐसे ही जगत् + ईशः = जगदीशः, यहाँ व्यंजन और स्वर का मेल हुआ है।

3. निम्नलिखित में संधि कीजिए–

उत्तर–
विद्या + आलयः	=	**विद्यालयः**
भानु + उदयः	=	**भानूदयः**
देव + ऋषिः	=	**देवर्षिः**
इति + आदिः	=	**इत्यादिः**
जगत् + ईशः	=	**जगदीशः**

4. निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए–

उत्तर– स्वागतम् = सु + आगतम्
नरेन्द्रः = नरः + इन्द्रः
भावुकः = भौ + उकः
नाविकः = नौ + इकः
वागीशः = वाक् + ईशः
सज्जनः = सत् + जनः

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– (क) स्वर संधि **दो स्वरों** के योग से बनती है।
(ख) व्यञ्जन वर्णों के मिलने पर **व्यंजन** संधि होती है।
(ग) विसर्ग से **परे स्वर** अथवा **व्यंजन विसर्ग संधि** होती है।

6. निम्नलिखित संधि के नाम लिखिए–

उत्तर– (क) कृष्णश्चलति = **विसर्ग संधि**
(ख) सज्जनः = **व्यंजन संधि**
(ग) वाग्दानम् = **व्यंजन संधि**
(घ) कवीश्वरः = **दीर्घ संधि (स्वर संधि के अंतर्गत)**
(ङ) नायकः = **अयादि संधि (स्वर संधि के अंतर्गत)**
(च) देवर्षिः = **गुण संधि (स्वर संधि के अंतर्गत)**

एकविंशतिः पाठः

शब्द-रूपाणि (Word Form)

अभ्यासः

1. 'करः' शब्द के रूप सभी विभक्ति में लिखिए–

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	करः	करौ	कराः
द्वितीया	करम्	करौ	करान्
तृतीया	करेण	कराभ्याम्	करैः
चतुर्थी	कराय	कराभ्याम्	करेभ्यः
पञ्चमी	करात्	कराभ्याम्	करेभ्यः
षष्ठी	करस्य	करयोः	कराणाम्
सप्तमी	करे	करयोः	करेषु
सम्बोधन	हे कर!	हे करौ!	हे कराः!

2. 'मुनिः' शब्द के रूप सभी विभक्ति में लिखिए–

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुनयोः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

3. 'साधुः' शब्द के रूप सभी विभक्ति में लिखिए–

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	हे साधु!	हे साधवः!

4. 'अस्मद्' सर्वनाम के सभी विभक्ति में रूप लिखिए–

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्,	नौ, अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्,मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

5. 'युष्मद्' सर्वनाम के सभी विभक्ति में रूप लिखिए–

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः

तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

द्वाविंशतिः पाठः

धातु-रूपाणि (Verb Form)

अभ्यासः

इसी प्रकार निम्न धातु के रूपों को लट् लकार में पूरे कीजिए–

चल् = चलना

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुषः	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुषः	चलामि	चलावः	चलामः

धाव् = दौड़ना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	धावति	धावतः	धावन्ति
मध्यम पुरुषः	धावसि	धावथः	धावथ
उत्तम पुरुषः	धावामि	धावावः	धावामः

पश्य = देखना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुषः	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट् लकारः (भविष्यत् काल)

अभ्यासः

इसी प्रकार निम्न धातु के रूपों को लृट् लकार में पूरे कीजिए–

चल् = चलना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुषः	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

गर्ज् = गरजना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	गर्जिष्यति	गर्जिष्यतः	गर्जिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	गर्जिष्यसि	गर्जिष्यथः	गर्जिष्यथ
उत्तम पुरुषः	गर्जिष्यामि	गर्जिष्यावः	गर्जिष्यामः

गम् = जाना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुषः	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकारः (आज्ञाकाल)

अभ्यासः

इसी प्रकार निम्न धातु के रूपों को लोट् लकार में पूरे कीजिए—

धाव् = दौड़ना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	धावतु	धावताम्	धावन्तु
मध्यम पुरुषः	धाव	धावतम्	धावत
उत्तम पुरुषः	धावानि	धावाव	धावाम

क्रीड् = खेलना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	क्रीडतु	क्रीडताम्	क्रीडन्तु
मध्यम पुरुषः	क्रीड	क्रीडतम्	क्रीडत
उत्तम पुरुषः	क्रीडानि	क्रीडाव	क्रीडाम

हस् = हँसना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुषः	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुषः	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ् लकारः (चाहिए के अर्थ में)

अभ्यासः

इसी प्रकार निम्न धातु के रूपों को विधिलिङ् लकार में पूरे कीजिए–

दृश् (पश्य्) = देखना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुषः	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुषः	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

भ्रम् = घूमना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	**भ्रमेत्**	**भ्रमेताम्**	**भ्रमेयुः**
मध्यम पुरुषः	**भ्रमेः**	**भ्रमेतम्**	**भ्रमेत**
उत्तम पुरुषः	**भ्रमेयम्**	**भ्रमेव**	**भ्रमेम**

वह् = बहना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	**वहेत्**	**वहेताम्**	**वहेयुः**
मध्यम पुरुषः	**वहेः**	**वहेतम्**	**वहेत**
उत्तम पुरुषः	**वहेयम्**	**वहेव**	**वहेम**

लङ् लकारः (भूतकाल)

अभ्यासः

इसी प्रकार निम्न धातु के रूपों को लङ् लकार में पूरे कीजिए—

स्था (तिष्ठ्) = ठहरना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	**अतिष्ठत्**	**अतिष्ठताम्**	**अतिष्ठन्**
मध्यम पुरुषः	**अतिष्ठः**	**अतिष्ठतम्**	**अतिष्ठत**
उत्तम पुरुषः	**अतिष्ठम्**	**अतिष्ठाव**	**अतिष्ठाम**

पिब् = पीना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	**अपिबत्**	**अपिबताम्**	**अपिबन्**
मध्यम पुरुषः	**अपिबः**	**अतिबतम्**	**अपिबत**
उत्तम पुरुषः	**अपिबम्**	**अपिवाव**	**अपिबाम**

भू = होना

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	**अभवत्**	**अभवताम्**	**अभवन्**
मध्यम पुरुषः	**अभवः**	**अभवतम्**	**अभवत**
उत्तम पुरुषः	**अभवम्**	**अभवाव**	**अभवाम**

त्रयोविंशतिः पाठः

उपयोगी शब्दावली (Useful Vocabulary)

नोट—(छात्र स्वयं करें।)